कथाधर्मी तेजेन्द्र

प्रो. प्रदीप श्रीधर

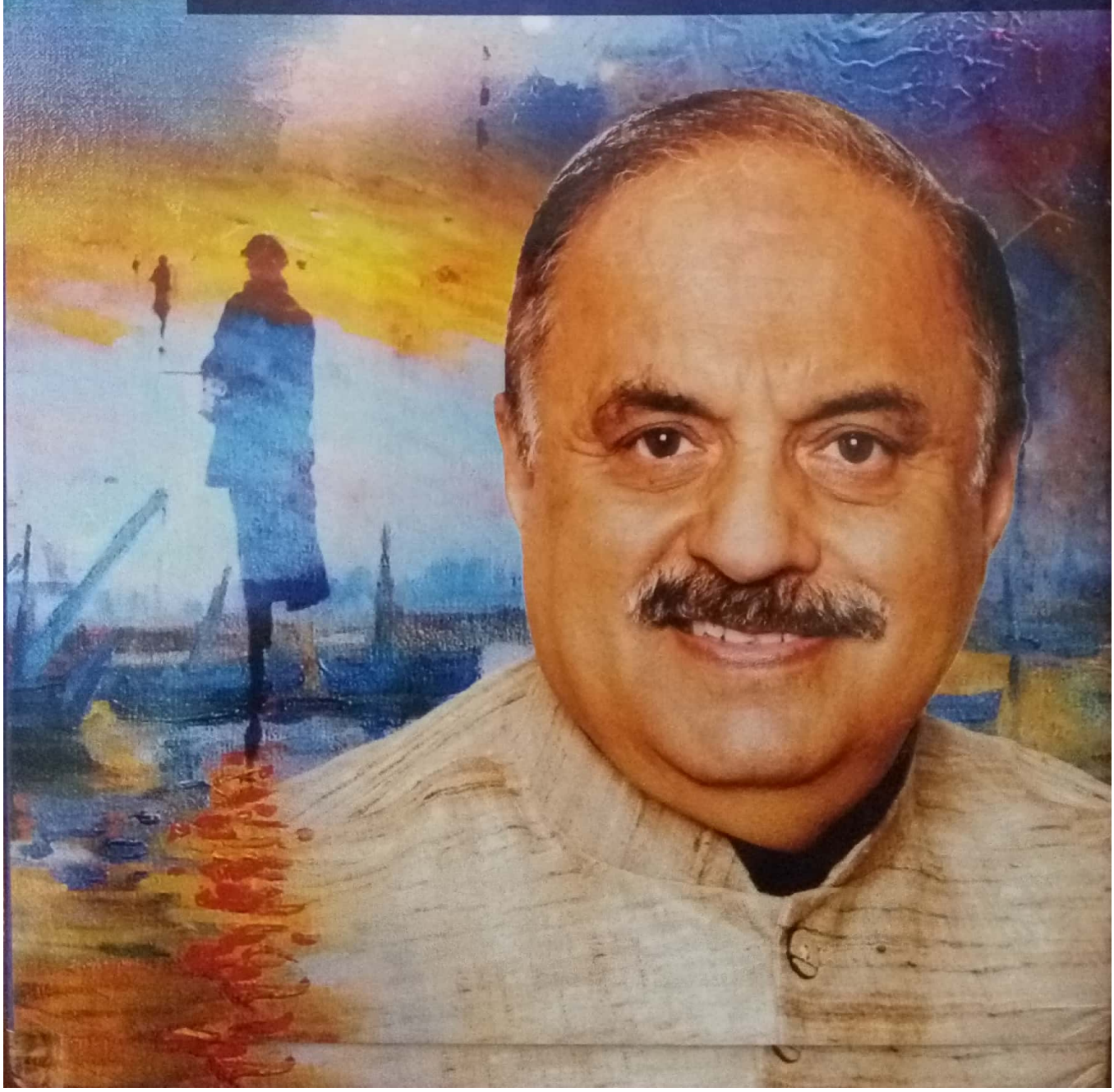

Scanned by CamScanner

9. तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में नारी पात्र — 82 - 89
तनु कुलश्रेष्ठ

10. समकालीन जीवन के कटु यथार्थ का आईना तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ — 90 - 97
चारू अग्रवाल

11. तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों का स्वरूप एवं उसमें अस्तित्ववादी चिन्तन — 98 - 105
डॉ. पूनम अग्रवाल

12. तेजेन्द्र शर्मा की 'प्रतिनिधि कहानियों' में पात्र-परिकल्पना — 106 - 115
अनुज कुमार चौहान

13. तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में मानवीय संवेदना — 116 - 121
डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा

14. तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में यथार्थवाद — 122 - 127
डॉ. शम्स आलम, फिरोज आलम

15. तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों के नारी पात्र — 128 - 134
श्वेता शर्मा

16. देह की कीमत और अभिशप्त कहानियों के संदर्भ में तेजेन्द्र शर्मा — 135 - 139
सुप्रिया. इ

17. प्रवासी साहित्य और तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ — 140 - 144
डॉ. मुहम्मद इकबाल सिद्दीकी

18. तेजेन्द्र शर्मा : विदेश में बसा देश — 145 - 150
डॉ. सोमलता सिंह

19. तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में रिश्तों का खोखलापन — 151 - 156
आरती चौधरी

20. तेजेन्द्र शर्मा और अर्थहीनता का अर्थ खोजती उनकी कहानियाँ — 157 - 163
डॉ. सीमा सिंह

Scanned by CamScanner

16

देह की कीमत और अभिशप्त कहानियों के संदर्भ में तेजेन्द्र शर्मा

– सुप्रिया. इ

प्रवास एक ऐसा व्यवहार है जो मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। बहुत सारे लोग अपना देश छोड़कर कोई दूसरे देश में जाकर बसता है। जो लोग जाते हैं उन सबकी पृष्ठभूमि अलग–अलग है। "प्रवासी का अर्थ है – विदेश में रहने वाला, परदेश में रहने वाला"[1] प्रवासी साहित्य हिंदी जगत में एक नई चेतना है। प्रवासी लेखक अपने जन्म–स्थान, देश और वातावरण को छोड़कर एक अन्य परिवेश में चला जाता है। प्रवासी हिंदी लेखक विभिन्न सामाजिक परिवेश से प्रभावित होकर उन परिस्थितियों को अपनी रचना का विषय बनाते हैं। उनके द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। प्रवासी हिन्दी साहित्य सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा है। प्रवासी मनुष्य की विषमताओं को देखकर प्रवासी हिंदी लेखक अपना दर्द समझकर उनको रचनाओं का विषय बनाता है। आज विदेशों में रहने वाला भारतीय लेखक प्रवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने साहित्य द्वारा उजागर कर रहे हैं। प्रवासी साहित्यकारों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रवासी साहित्यकार अपने अनुभव और भावनाओं को अपने साहित्य के माध्यम से घर तक पहुँचाता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है तेजेन्द्र शर्मा। उनका जन्म 21 अक्टूबर 1952 को पंजाब में जगराँव नाम के एक गाँव में हुआ। उन्हें साहित्य अकादमी, युवा साहित्यकार, सर्वश्रेष्ठ कहानीकार आदि अनेक पुरस्कार मिले हैं। अंग्रेजी में तीन पुस्तकें लिखी हैं। कहानियों के अलावा कविताएँ भी लिखी हैं। पहला कविता संग्रह घर तुम्हारा (2007)।

Scanned by CamScanner

उनकी रचनाओं में कोई विमर्श से संबंधित विषय नहीं मिलता है। तेजेन्द्र जी की कहानियों में प्रवासियों के दर्द का चित्रण मिलता है। उनकी पहली कहानी है 'काला सागर'। 'काला सागर' कहानी 1958 में कनिष्क विमान दुर्घटना पर आधारित है। 'काला सागर' में मृत्यु जैसी दुर्घटना का यथार्थ चित्रण किया है। लाशों को एक विनिमय वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है। विदेशी वस्तुओं के प्रति हमारा जो लगाव है उसके बारे में भी इसमें बताया गया है।

तेजेन्द्र जी की पत्नी की मृत्यु कैंसर से हुई थी। इसके आधार पर 'देह की कीमत' लिखी। इस कहानी में अधिकांश औरतों के दर्द का चित्रण है। यहाँ लेखक उसके देह की कीमत नहीं, बल्कि समाज में अपनी भूमिका निभाने के लिए लड़ रहा है। शरीर और मन से लड़ता हुआ लेखक कहानियों के द्वारा हमारे सामने कई सारे सवाल को सामने रखता है। उन्होंने अपनी कहानियों में यांत्रिक पात्रों का चित्रण नहीं किया है इसलिए तेजेन्द्र जी की कहानियाँ पढ़ते वक्त उस पात्र में हम देख सकते हैं उनके दर्द को देह की कीमत के पात्र पम्मी के समान पैसा कमाने के लिए विदेश जाना और मृत पति के साथ पाँच महीने बीतने आदि कई रूपों में देह की कीमत के रूप हमारे सामने आते हैं। प्रेमचन्द के समान तेजेन्द्र जी ने भी अपनी रचनाओं के द्वारा यथार्थ से हमारा साक्षात्कार कराया है। स्वार्थ भरा संसार का चित्रण तथाकथित प्रस्तुत किया है। हरदीप के भाई लाश लेने के लिए टोकियो जाना चाहता है और हरदीप की माँ बेटे की लाश में 3 लाख का लाभ दिखाई देता है। दारजी ने परेशान होकर कहा है कि "क्षुब्ध थे अपने ही पुत्र या भाई के कफन के पैसों की चाह इस परिवार को कहाँ तक गिरायेगी, उन्हें समझ नहीं आ रहा था। मन किया सब कुछ छोड़–छाड़कर संन्यास ले लें।"[2] पम्मी को यह समझ में नहीं आया कि यह पति की देह की कीमत है या उसके साथ बिताये गये पाँच महीने की कीमत है। वे सिर्फ यह चाहते है कि आराम से जीना है इसके लिए बहुत सारे पैसा चाहिए। लेकिन अंत में उसका मन पश्चाताप से जलता है। केवल अपनी भौतिक सुख के लिए अपने शरीर को बेचता है। एक कैंसर से पीड़ित नायिका का चित्रण इस कहानी में देख सकते हैं।

कैंसर, रेत का घरौंदा, अपराध बोध का प्रेत इन कहानियों की विषय वस्तु एक है लेकिन तरीके से बताया गया है। इन कहानियों का नायक नरेन है। कठिन समस्याओं को एक मुस्कुराहट के साथ सामने करने की क्षमता इस पात्र में है। जीवन के एक–एक पल को जीने का स्वातंत्र्य लेखक ने उसको दिया है। कहानियों के माध्यम से कैंसर की बीमारी का संकेत किया है। पूनम

Scanned by CamScanner

सवाल करती है कि "मेरा पति मेरे कैंसर का इलाज दवा से करने की कोशिश कर सकता है ... मगर जिस कैंसर ने उसे चारों ओर जकड़ रखा है क्या उस कैंसर का कोई इलाज है।"[3] तेजेन्द्र जी ने उनकी रचनाओं द्वारा अपने जीवन के अनुभवों को प्रस्तुत किया है।

उनकी रचनाएँ हमारी जिन्दगी का एक हिस्सा बन जाती हैं। जीवन और मानवीय मूल्यों का व्यापक दृष्टिकोण उनकी रचनाओं में दृष्टिगोचर है। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा जीवन की सच्चाई को सामने रखा है। उनकी रचनाएँ हमें सोचने के लिए विवश करती हैं। तेजेन्द्र शर्मा ऐसे कहानीकार हैं जो अपना जीवन दर्द पाठकों के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं जो सभी के मन में जिंदा रहता है। उनकी मर्मस्पर्शी कहानियों में दूसरा है अभिशप्त। इसमें उन्होंने एक मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है। इस कहानी का मुख्य पात्र है रजनीकांत। बी. ए. पास होने के बाद भी नौकरी न मिलने की वजह से लंदन जाकर वहाँ रहने को विवश हो जाता है। रजनीकांत उनके गाँव के स्नेहा नाम की लड़की से प्यार करता है। लंदन जाने के बाद भी वह स्नेहा को भूल नहीं पाया। लेकिन रचनीकांत को उससे तीन वर्ष बड़ी निशा से शादी करना पड़ती है। निशा के माता–पिता ने पहले ही उसको समझा दिया कि "निशा बेटी शादी होते ही अलग घर ले लेना पाँच साल से पहले रजनीकांत को ब्रिटिश पासपोर्ट के लिए एप्लाई नहीं कर सकता है। तब तक उसे तुम्हारा गुलाम बनकर रहने की आदत हो जाएगी।"[4] शादी के बाद दोनों एक ही घर के अंदर अजनबी बनकर जीते हैं। दोनों को एक पुत्र जन्म लेता है। पति होने के नाते जो कुछ भी आदर उन्हें मिलना था उसे उसके लिए भी लायक नहीं समझा।

कहानी में शुरू से लेकर अंत तक रजनीकांत सब कुछ सहकर रहता है। जिन्दगी की परिस्थिति उन्हें सब कुछ सामना करने की ताकत देती है। वह अपने दर्द भरे जीवन को किसी के सामने प्रकट भी नहीं कर पाता। जिन्दगी में सहारा देने के लिए कोई नहीं है इसलिए धीरे–धीरे वह शराब का सहारा लेता है। समय के साथ–साथ सब कुछ बदल जाता है। न ही उनका सपना पूरा हुआ और न ही उनके घरवालों की जरूरतों को पूरा किया। रजनीकांत के द्वारा अकेलापन, अजनबीपन आदि भावों को अभिव्यक्त किया है। शर्मा जी ने इस कहानी के माध्यम से पुरुष वर्ग के प्रति होने वाले अत्याचार या शोषण का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है साथ ही प्रवासी जीवन का चित्रण भी किया है।

इनकी रचनाओं को पढ़ने से ऐसा लगता है कि शर्मा जी को समस्याओं को उठाने की ताकत है और उन समस्याओं को प्रस्तुत करने के

Scanned by CamScanner

लिए एक–एक पात्र का निर्माण करने की शक्ति भी है। वे कहानियों के माध्यम से दैनिक जीवन की समस्याओं को उजागर करते हैं। उनके पास ढेर सारे अनुभव हैं। इतने सारे अनुभवों को एक–एक कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियाँ और कहानी के पात्र मर्मस्पर्शी होते हैं क्योंकि जिस परिस्थिति में वे जीते हैं उसी परिवेश को वे कहानियों में दिखाते हैं –

"मैं तुम्हें
मेरे देश
के बनने वाले भविष्य
कह पाता ! और मिलता मुझे
सुकून ! शांति और सुख !
इस देश के बनने वाले भविष्य
का वर्तमान
घमासान, परेशान

बोझा उठाओ, जुट जाओ !
देखना
वहाँ कमर न टूट जाए
भविष्य कहीं
कुबड़ा न हो जाए
भविष्य कहीं
कुबड़ा न हो जाए।"

हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में तेजेन्द्र जी ने प्रवासी जीवन का चित्रण करके कथा साहित्य को एक नया आयाम दिया है। विदेशी वातावरण, विदेशी और भारतीय पात्रों की स्थिति आदि का सूक्ष्म चित्रण उन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। इस तरह प्रवास में लेखकीय रचना संसार ने अपने अनुभवों को गहराई से अपने कथा साहित्य में दिखाया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. अरविन्द मोहन, प्रवासी मज़दूरों की पीड़ा, राधाकृष्ण पब्लिकेशन।
2. उषा राजे सक्सेना, ब्रिटेन में हिंदी, मेघा बुक्स।
3. कैलाश कुमारी सहाय, प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा, अविराम प्रकाशन।
4. सुधा ओम ढींगरा, वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ, राजकमल प्रकाशन।

Scanned by CamScanner

5. अरविन्द मोहन, प्रवासी मज़दूरों की पीड़ा, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।
6. डॉ. कैलाश कुमारी सहाय, प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा, अविराम प्रकाशन।
7. डॉ. सूरज प्रकाश मिश्र, समकालीन हिंदी कहानियों में पीढ़ियों का अंतराल, वाणी प्रकाशन।
8. साक्षात्कार, अंक – 408, दिसम्बर 2013
9. प्रवासी संसार, अंक 2, जनवरी–मार्च – 2014
10. वर्तमान साहित्य, प्रवासी साहित्य मई – 2006

सहायक प्राध्यापिका (हिन्दी विभाग)
फातिमा कॉलेज, मदुरै – 18
दूरभाष – 89030 09416
(Supriyapreman10@gmail.com)

●

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-83144-43-3

पुस्तक : कथाधर्मी तेजेन्द्र
संपादक : प्रो. प्रदीप श्रीधर
कॉपीराइट : संपादक मण्डल
प्रकाशक : **शुभम् पब्लिकेशन**
3ए/128, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)
सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903
shubhampublicationsknp@gmail.com
Website : www.shubhampublications.com
संस्करण : प्रथम, 2018
शब्द सज्जा : विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : आर्यन डिजिटल प्रेस नई दिल्ली – 110002
जिल्दसाज : तबारकअली, कानपुर
मूल्य : 795.00 रुपये

Kathadharmi Tejendra
Edited By : Prof. Pradeep Shridhar
Price : Rs. Seven Hundred Ninety Five Only.

Scanned by CamScanner